REVIEW OF RESEARCH

कक्षा 9वी के विद्यार्थियों हेतु सामाजिक विज्ञान पर विकसित प्रमाप की उपयोगिता का अध्ययन।

सुरेन्द्र कुमार तिवारी[1] , रश्मि सिंह[2]

[1]प्राचार्य
[2]शोधार्थी

ISSN: 2249-894X
IMPACT FACTOR : 5.7631(UIF)
UGC APPROVED JOURNAL NO. 48514
VOLUME - 8 | ISSUE - 8 | MAY - 2019

सारांश

स्व अधिगम सामग्री एक नवीन अवधारणा है। जो परम्परागत शिक्षा से अलग हटकर शिक्षा को वैयक्तिक भिन्नता तथा स्व–गति के अनुसार सीखने पर बल देती हैं। क्योकि शिक्षा एक सामाजिक प्रक्रिया है। अतः स्व– अधिगम सामग्री द्वारा सामाजिक विज्ञान से सम्बन्धित विषयों को प्रभावशाली ढग से प्रस्तुत करके विद्यार्थियों को लाभ पहुँचाया जा सकता हैं।

मुख्य बिन्दु : शिक्षण अधिगम प्रक्रिया, सामाजिक विज्ञान, स्व.– अधिगम सामग्री.

प्रस्तावना –

शिक्षा जीवनपर्यन्त चलने वाली प्रक्रिया है। शिक्षा के निश्चित उद्देश्यों की प्राप्ति के लिए शिक्षण – अधिगम प्रक्रिया को प्रभावशाली बनाकर वांछनीय अधिगम उद्देश्यों की प्राप्ति की जा सकती है। वैदिक कालीन शिक्षा प्रणाली शिक्षक केन्द्रित रही है। जहाँ पर शिक्षक केन्द्र बिन्दु पर था। और विद्यार्थी गौण था। उन अधिगम परिस्थितियों में शिक्षक सक्रिय तथा शिक्षार्थी निष्कीय श्रोता मात्र थे। किन्तु वर्तमान शैक्षिक परिस्थितियों में विद्यार्थियों की वैयक्तिक विभिन्नताओं, सामाजिक – आर्थिक स्तर, बुद्धि , व्यक्तित्व, रूचि एवं अभिक्षमताओं को ध्यान में रखते हुए अधिगम वातावरण को तैयार किया जा रहा है। इन अधिगम परिस्थितियों में विद्यार्थियों के अनुकूल पाठ्यक्रम उद्देश्य एवं शिक्षण – विधियों को तैयार किया जाना चाहिए।

वर्तमान समय में विद्यार्थियों की आवश्यकताओं के अनुसार विभिन्न प्रकार की विधि, प्रविधि, शिक्षण–नीति तथा आव्यूह का निर्माण किया जा रहा हैं। शिक्षा तकनीकी ने विभिन्न प्रकार की तकनीकी जैसे – हार्डवेयर, साफ्टवेयर को शिक्षा को प्रदान किया है। इन तकनीकियों का प्रयोग करके विद्यालय में पढाये जा रहे सभी विषयों हेतु स्व– अधिगम सामग्री का विकास किया जा सकता हैं।

सामाजिक विज्ञान के लिए प्रमाप एक अनुदेशनात्मक विधि के रूप में

व्यक्तिपरक अनुदेशन शिक्षण का वह रूप हैं, जिसमें अनुदेशन एक व्यक्ति के आधार पर प्रदान किया जाता है न कि सामूहिक आधार पर, ताकि अधिगमकर्ता की रूचि, योग्यता, क्षमता तथा आवश्यकता के अनुरूप शिक्षण प्रदान किया जा सकें।

अभिक्रमित अनुदेशन सामग्री (PLM), कम्प्यूटर सहाय अनुदेशन (CAI) तथा प्रमाप (Module) आदि कुछ व्यक्तिपरक अनुदेशन प्रदान करने वाली अनुदेशन सामग्रियाँ हैं। जब अधिगमकर्ता इन सामग्रियों के माध्यम से स्वयं की रूचि, योग्यता तथा आवश्यकतानुसार स्वप्रेरित होकर अधिगम करता हैं। तब इसे स्व–अधिगम सामग्री कहा जाता हैं।

LBP PUBLICATION

उदाहरणार्थ प्रमाप को एक अनुदेशनात्मक विधि के रूप में लेकर सामाजिक विज्ञान विषय पर विद्यालयी स्तर हेतु प्रमाप को विकसित किया है। प्रमाप को विकसित करने के निम्न सोपान हैं। –

(1) उद्देश्य निर्धारित करना।
(2) विषय वस्तु का चयन करना।
(3) पद – विश्लेषण करना।
(4) प्रमाप का विकास करना।

शोधकर्ता ने सामाजिक विज्ञान का एक भाग भूगोल, की एक ईकाई **जलवायु** को प्रमाप के रूप में विकसित किया हैं। जो निम्नलिखित हैं।

प्रमाप का विकास
ईकाई– प्रथम
जलवायु
अनुक्रमणिका

क्रमांक	विषयवस्तु
1-1-0	प्रमाप का परिचय
1-2-0	प्रारम्भिक व्यवहार
1-3-0	अन्तिम व्यवहार
1-4-0	जलवायु का तात्पर्य
1-5-0	मौसम का तात्पर्य
1-6-0	भारतीय जलवायु की विशेषता
1-7-0	भारतीय जलवायु को प्रभावित करने वाले कारक।
1-8-0	भारतीय मानसून की क्रियाविधि।
1-9-0	सरांश
1-10-0	अभ्यास कार्य
1-11-0	सन्दर्भ सूची

1-1-0 प्रमाप का परिचय –

प्रिय विद्यार्थियों,

प्रत्येक मनुष्य तथा जीव –जन्तु पर वहाँ पायी जाने वाली जलवायु का प्रभाव पड़ता हैं। पेड़– पौधों तथा वनस्पतियों पर भी वहाँ पायी जाने वाली जलवायु का गहरा प्रभाव पड़ता है। इन सभी पर जलवायु का सकारात्मक तथा नकारात्मक दोनों ही प्रकार का प्रभाव पड़ता हैं। अतः प्रत्येक विद्यार्थी को अपने जलवायु का ज्ञान होना अति आवश्यक हैं। इसी आवश्यकता को ध्यान में रखते हुए सामग्री में जलवायु का तात्पर्य, भारतीय जलवायु की विशेषताँ, भारतीय जलवायु को प्रभावित करने वाले कारक तथा भारतीय मानसून की क्रिया विधि को सम्मिलित किया गया हैं।

कई बार शिक्षक कक्षा में पढ़ा देते हैं। और विद्यार्थियों के ना समझ आने पर भी चुपचाप सुनते रहते हैं। कभी – कभी शिक्षक के अन्य कार्यो में व्यस्त होने के कारण वे समय से अपना कोर्स समय से पूरा नहीं कर पाते तथा बाद में जल्दी – जल्दी पढ़ा देते हैं। ऐसी परिस्थिति में विद्यार्थी को समझ में नहीं आता हैं। जिससे उनका अध्यापन नीरस हो जाता हैं।

प्रस्तुत प्रमाप में सर्वप्रथम अन्तिम व्यवहार के अन्तर्गत उद्देश्य दिये गये हैं, जिन्हे आप प्रमाप पढ़ने के बाद प्राप्त कर सकेंगे। इस सामग्री को आप अपनी गति में पढ़ सकते हैं। इसमें विषय वस्तु को सरल व छोटे

– छोटे वाक्यों में प्रस्तुत किया गया हैं। आवश्यकतानुसार चित्रों को शामिल किया गया है। विषय वस्तु को और अधिक स्पष्ट करने के लिए कुछ उदाहरण सोचिये के नाम से बाक्स तथा अन्तक्रिया प्रश्नो को बाक्स में प्रस्तुत किया गया हैं। सामग्री में विषयवस्तु के वर्णन के पश्चात् साराश अभ्यास प्रश्न, सामग्री पर आधारित विषयवस्तु के बीच –बीच में जो अन्तक्रिया प्रश्न पूछे गये हैं।

सम्पूर्ण प्रमाप को इस प्रकार विकसित किया गया है कि आप अपनी गति व रूचि के अनुसार पढ़ सके। लेकिन फिर भी आप को किसी शब्द, वाक्य आदि को समझने में कठिनाई होती है। तब आप मुझसे पूछ सकते हैं।

1.2.0 प्रारम्भिक व्यवहार

जलवायु के अध्ययन से पूर्व विद्यार्थी –

(1) दी गयी विषयवस्तु को पढ़ सकते हैं।
(2) जलवायु पर अपना विचार व्यक्त कर सकते हैं।
(3) जलवायु की आवश्यकता एवं महत्व बता सकते हैं।

1.3.0 अन्तिम व्यवहार –

जलवायु के अध्ययन के पश्चात् विद्यार्थी –

(1) जलवायु का तात्पर्य लिख सकेगें।
(2) भारत की जलवायु की विशेषता लिख सकेगें।
(3) विद्यार्थी ऋतुओं की सूची बना सकेगें।
(4) प्राकृतिक आपदाओं को पहचान सकेगें।
(5) भारतीय जलवायु को प्रभावित करने वाले कारको को पहचान सकेगें।
(6) भारतीय मानसून की क्रिया विधि को समझ सकेगें।

1.4.0 जलवायु का तात्पर्य

किसी विस्तुत क्षेत्र में लम्बे समय तक मौसमी घटनाएं घटती रहती हैं। उसे जलवायु कहते हैं।

उदाहरण :– भारत एक मानसूनी जलवायु का देश हैं। जहां 15 जून – 15 सिम्तंबर तक हवाएं समुद्र से स्थल की और चलती हैं। जिससे पूरे भारतीय क्षेत्र पर मानसूनी जलवायु का प्रभाव रहता हैं।

इस प्रकार कह सकते हैं कि लम्बे समय तक पायी जाने वाली मौसमी घटनाएँ जलवायु कहलाती हैं।

(देखे चित्र 1.1)

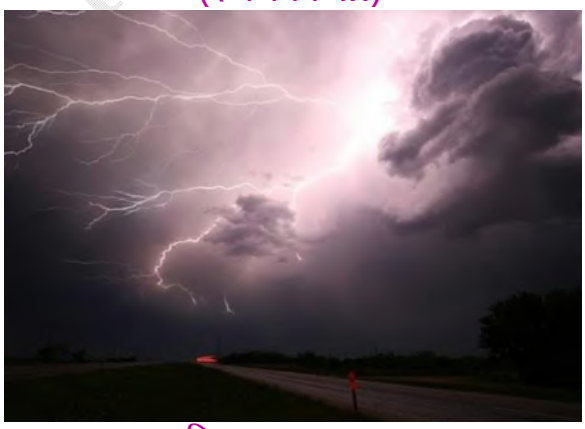

चित्र 1.1 जलवायु

LBP PUBLICATION

सोचिए :–
हमारे चारों और प्रतिदिन घटित होने वाली परिघटनाऐं कौन –कौन सी हैं ?

आइए ! हमारे चारों और प्रतिदिन घटित होने वाली परिघटनाओं का अध्ययन करें –

1.5.0 मौसम का तात्पर्य

एक क्षेत्र विशेष में प्रतिदिन घटित होने वाली परिघटनायें मौसम कहलाता हैं। परिघटना के अन्तर्गत वायुमण्डलीय दशायें जैसे पवन, तापमान, वर्षा, वायुदाब, आर्द्रता आदि आते हैं।

इस प्रकार साधारण शब्दों में मौसम वह हैं जो प्रतिदिन के परिवर्तन को दिखाता हैं। तथा जलवायु लम्बे अवधि तक एक परिस्थिति को दिखाता हैं। **(देखे चित्र 1.2)**

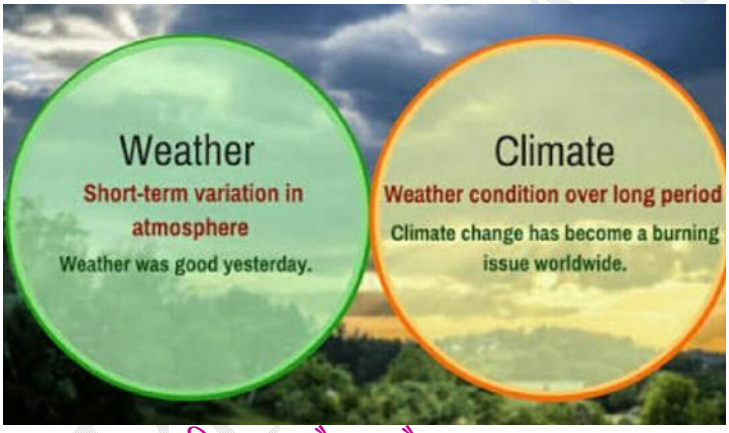

चित्र 1.2 मौसम और जलवायु

प्रश्न – 1 जलवायु और मौसम का तात्पर्य बताइए।

इस प्रकार हमने जलवायु और मौसम का अध्ययन किया। आइए !

अब हम भारतीय जलवायु की विशेषताओं का अध्ययन कहते हैं।

1.6.0 भारतीय जलवायु की विशेषताएँ –

भारतीय जलवायु की निम्नलिखित विशेषताएँ हैं –

(1) वायु दिशा में ऋतुवत् परिवर्तन –

भारतीय जलवायु ऋतु के अनुसार बदलती रहती है। जैसे ग्रीष्म ऋतु में हवाये समुद्र से स्थल की ओर चलती है। जिससे भारतीय क्षेत्र में आर्द् जलवायु का प्रभाव देखने को मिलता है। इसी प्रकार शीत ऋतु में हवायें स्थल से समुद्र की ओर चलती हैं। जिससे भारतीय क्षेत्र मे शुष्क जलवायु का प्रभाव देखने को मिलता हैं।

(2) उच्च एवं निम्न वायु – दाब क्षेत्रों का निर्माण –

मौसम के अनुसार भारत के स्थल भाग पर उच्च तथा निम्न वायुदाब क्षेत्रों का निर्माण होता हैं। जैसे ग्रीष्म ऋतु में स्थल भाग पर निम्न वायुदाब तथा समुद्रो पर उच्च वायु दाब का निर्माण होता है। ठीक इसी के विपरीत शीत ऋतु में स्थल भाग पर उच्च वायुदाब तथा समुद्रों पर निम्न वायुदाब का निर्माण होता हैं। जिससे ग्रीष्म ऋतु में हवायें समुद्र से स्थल की ओर तथा शीत ऋतु में हवायें स्थल से समुद्र की ओर चलती हैं।

(3) मौसमी परिवर्ती वर्षा –

ज्ब वर्षा निरन्तर या लगातार न होकर रूक –रूक कर होती है। तो उसे मौसमी परिवर्ती वर्षा कहते हैं।

(4) ऋतुओ की बहुलता –

भारतीय जलवायु की एक यह भी विशेषता है कि यहाँ पर विभिन्न प्रकार की ऋतुएँ पायी जाती हैं। भारत में 6 प्रकार ऋतुएँ पायी जाती हैं।

(1) हेमन्त
(2) शिशिर
(3) बसन्त
(4) ग्रीष्म
(5) वर्षा
(6) शीत।

(देखे चित्र 1.3)

(5) प्राकृतिक आपदाओं का सकंट

भारतीय जलवायु के अन्तर्गत विभिन्न प्रकार की आपदाएँ भी आती है। जैसे बाढ, सूखा, चक्रवात, भूकम्प, बादल फटना आदि। **(देखे चित्र 1.4)**

(देखे चित्र 1.4)

प्रश्न 2 भारतीय जलवायु की विशेषताएँ बताइये ।

इस प्रकार हमने भारतीय जलवायु की विशेषताओं का अध्ययन किया। **आइए! अब हम भारतीय जलवायु को प्रभावित करने वाले कारकों का अध्ययन करते हैं।**

भारतीय जलवायु को प्रभावित करने वाले कारक

भारतीय जलवायु को प्रभावित करने वाले निम्नलिखित कारक हैं।

(1) अक्षांश –

कर्क रेखा भारत को दो भागों में बाँटती हैं। इसका उत्तरी भाग शीतोष्ण कटिबन्धीय जलवायु और दक्षिणी भाग उष्ण कटिबन्धीय जलवायु में रहता हैं। (देखे चित्र 1.5)

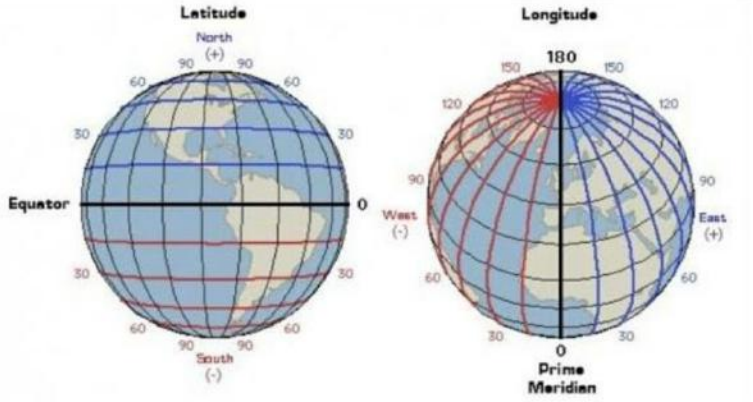

(देखे चित्र 1.5) अक्षांश

(2) विषुवत रेखा से दूरी –

भारत का उत्तरी छोर विषुवत रेखा से 3,950 किमी. दूर हैं। जबकि दक्षिणी छोर 876 कि.मी. दूर हैं। इस कारण उत्तरी भारत दक्षिण की अपेक्षा ठण्डा रहता हैं।

(3) हिमालय –

भारत के उत्तर में हिमालय के स्थित होने के कारण यह मध्य एशिया से आने वाली ठण्डी हवाओ को रोकता है इस प्रकार यह वर्षा कराने में सहायक हैं।

(देखे चित्र 1.6) हिमालय

(4) समुद्र तट से दूरी –

समुद्र का जलवायु पर समान प्रभाव पड़ता हैं। जैसे – जैसे जलवायु की समुद्र से दूरी बढ़ती हैं। लोग विभिन्न प्रकार की मौसमी अवस्थाओं को महसूस करते हैं।

(5) हवाओं की दिशा –

समुद्र की और से आने वाली हवायें जलवाष्प के कारण बारिश करती हैं। हिन्द महासागर से आने वाली हवाओ के कारण ही भारत में वर्षा होती हैं।

प्रश्न 3. – भारतीय जलवायु को कौन–कौन से कारक प्रभावित करते हैं।

आइए! भारतीय मानसून की क्रिया विधि का अध्ययन करें।

सोचिए ? भारतीय मानसून की क्रियाविधि कैसी होती हैं।

भारतीय मानसून की क्रियाविधि

मानसून शब्द की उत्पत्ति अर बी शब्द मौसिम से हुई हैं, जिसका शब्दिक अर्थ है मौसम। मानसून का अर्थ, एक वर्ष के दौरान वायु की द्रिशा में ऋतु के अनुसार परिवर्तन हैं।

भारतीय मानसून की क्रिया विधि को 2 भागों में बाँटा जा सकता हैं।

(1) ग्रीष्मकालीन क्रियाविधि।
(2) शीतकालीन क्रियाविधि।

(1) ग्रीष्मकालीन क्रियाविधि – ग्रीष्म ऋतु की अवधि 15 मार्च से 15 जून तक रहती हैं। ग्रीष्म ऋतु में तापमान अधिक होने के कारण समुद्र क्षेत्र उच्च दाब वाला तथा स्थल क्षेत्र निम्न वायुदाब वाला हो जाता हैं। जिसके कारण ग्रीष्मकालीन वर्षा होती हैं। उत्तरी भारत में ग्रीष्म काल में दिन के समय चलने वाली पहुआ हवाएँ बहुत ही उष्ण व शुष्क होती हैं। इसको लू कहते हैं। **(देखे चित्र 1.7)**

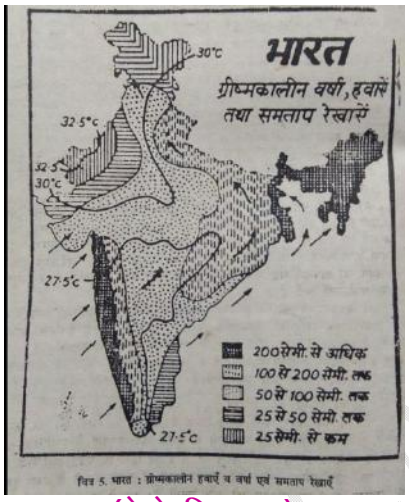

(देखे चित्र 1.7)

(2) शीतकालीन क्रियाविधि– शीत ऋतु सामान्यता 15 दिसम्बर से 15 मार्च तक रहती हैं। शीत ऋतु में तापमान कम होने के कारण एशिया महाद्वीप पर उच्च वायुदाब रहता हैं। तथा हिन्द महासागर पर निम्न वायुदाब रहता हैं। शीत ऋतु में हवाऐं स्थल से चलती हैं। जिसके कारण शुष्क होती हैं। स्थल क्षेत्र निम्न वायुदाब वाला तथा समुद्र क्षेत्र उच्च वायुदाब वाला होने के कारण शीतकालीन वर्षा होती हैं। **(देखे चित्र 1.8)**

(देखे चित्र 1.8)

प्रश्न – 4 ग्रीष्मकालीन क्रियाविधि को स्पष्ट कीजिए ?
प्रश्न – 5 भीतकालीन क्रियाविधि को स्पष्ट कीजिए ?

साराशं –

किसी क्षेत्र में लम्बे समय तक एक जैसी मौसमी घटनाओं का होना जलवायु कहलाता हैं। तथा प्रतिदिन घटित होने वाली परिघटनाएँ मौसम कहलाती हैं। भारतीय जलवायु की कुछ विशेषता है – जैसे ऋतुओं की बहुलता, उच्च तथा निम्न वायु दाब क्षेत्रो का निर्माण, प्राकृतिक आपदाओ का सकंट आदि। इसके अतिरिक्त अनेक कारक है जो भारतीय जलवायु को प्रभावित करते है– जैसे – अक्षाशं, ऊचाँई, उच्चावच, वायुदाब एव पवन, समुद्र तट से दूरी आदि। भारतीय जलवायु की क्रिया विधि भी ऐसी है। कि इसको ग्रीष्म कालीन क्रिया विधि तथा शीतकालीन क्रियाविधि में बाँटकर पूरी प्रक्रिया को समझा जा सकता हैं।

अभ्यास कार्य :–

प्रश्न 1 – रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए।
निर्देष – दिये गये शब्दों में से सही शब्द छाँटकर रिक्त – स्थानों की पूर्ति कीजिए।
(लम्बी अवधि तक घाटित मौसमी घटनाएँ, प्रतिदिन घटित होने वाली परिघटनाएँ, मानसूनी) ‘
(क) जल वायु का तात्पर्य हैं। .....।
(ख) मौसम का तात्पर्य हैं। .....।
(ग) भारत एक ..... जलवायु देश हैं।
प्रश्न 2. दिये गये प्रश्न में सत्य/असत्य पर सही (√) का निशान लगाइए –
(क) मानसून शब्द की उत्पत्ति अरबी शब्द से हुई हैं। (सत्य /असत्य)
(ख) शीत ऋतु 15 दिसम्बर से 15 मार्च तक रहती हैं। (सत्य /असत्य)
(ग) भारतीय जलवायु मानसूनी हैं। (सत्य /असत्य)
(घ) भारत में छः प्रकार की ऋतुएँ आई जाती हैं। (सत्य /असत्य)
(ड़) भारत के उत्तर में हिमालय पर्वत हैं। (सत्य /असत्य)
प्रश्न – 3 जलवायु से क्या तात्पर्य हैं।
प्रश्न – 4 भारतीय ऋतुओं को सूचीबद्ध करें।
प्रश्न – 5 भारतीय जलवायु को प्रभावित करने वाले कारक स्पष्ट कीजिए।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची –

जैन, पुखराज, भटनागर, एस.के. (2001) सामाजिक विज्ञान , रतन बुक डिपो, मथुरा।
सामाजिक विज्ञान समकालीन भारत –1, प्रकाशन प्रभाग में सचिव, राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद् श्री अरविन्द मार्ग, नयी दिल्ली 110016 द्वारा प्रकाशित तथा करन प्रिंटर्स, ए.फ– 29/2, ओखला इंडस्ट्रियल एरिया, फेज – II नयी दिल्ली 110020 द्वारा मुद्रित।

महत्वपूर्ण बिन्दु –

- स्व – अधिगम सामग्री द्वारा विद्यार्थी वैयक्तिक भिन्नता तथा अपनी गति के अनुसार सीखते हैं।
- स्व – अधिगम सामग्री को कम्प्यूटरीकृत करके भी विद्यार्थियों को लाभ पहुँचाया जा सकता हैं।
- स्व – अधिगम सामग्री को पुस्तक के रूप में भी प्रकाशित किया जा सकता हैं।
- स्व – अधिगम सामग्री में समय का लचीलापन होता हैं। इसमें कार्य को समय पर पूर्ण करने की बाध्यता अपेक्षाकृत न्यून होती हैं।

- स्व – अधिगम सामग्री द्वारा दूरस्थ– शिक्षा के माध्यम से उन विद्यार्थियों को लाभ पहुँचाया जा सकता है। जो नियमित शिक्षा नहीं ग्रहण कर सकते।

निष्कर्ष

उपर्युक्त बातों तथा शोधो से यह ज्ञात होता है कि स्व – अधिगम सामग्री भी एक माध्यम है जो विद्यार्थियों को प्रभावशाली अधिगम करा सकती हैं। स्व – अधिगम सामग्री को लिखित रूप से, कम्प्यूटरीकृत रूप से तथा पुस्तक रूप में प्रकाशित करा कर उन सभी विद्यार्थियों को लाभान्वित कर सकते हैं। जो नियमित शिक्षा प्राप्त नहीं कर सकते। इसको निरौपचारिक शिक्षा में शामिल किया जा सकता है। जो विद्यार्थियों को कई प्रकार से लचीलापन प्रदान करके सुविधा तथा लाभ पहुँचाता हैं।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची –

मगंल, एस. के. (2005) शैक्षिक तकनीकी के मूल तत्व एवं प्रबन्धन, लायल बुक डिपो, मेरठ
कुलश्रेष्ठ, एस.पी. (2015) शैक्षिक तकनीकी के मूल आधार, आर, लाल बुक डिपो, मेरठ
भटनागर आर.पी. (1992) शिक्षक तकनीकी, लायल बुक डिपो, मेरठ
श्रीवास्तव, रोमा एवं गौतम, आरती, (2016) सामाजिक विज्ञान शिक्षण, अग्रवाल पब्लिकेशन, आगरा।
काकंरेजा ताज मोहम्मद (2000) कक्षा दसवीं गणित के कुछ अध्यायों पर स्व – अधिगम सामग्री की प्रभावशीलता का अध्ययन, अप्रकाशित शोध प्रबधं, देवी अहिल्या विश्वविद्यालय , इन्दौर
शर्मा, डॉ. आर. के. एवं वशिष्ठ डा. मधु. (2009) सामाजिक विज्ञान शिक्षण राधा प्रकाशन मन्दिर आगरा।

LBP PUBLICATION